अंतरा-शब्दशक्ति

कसक

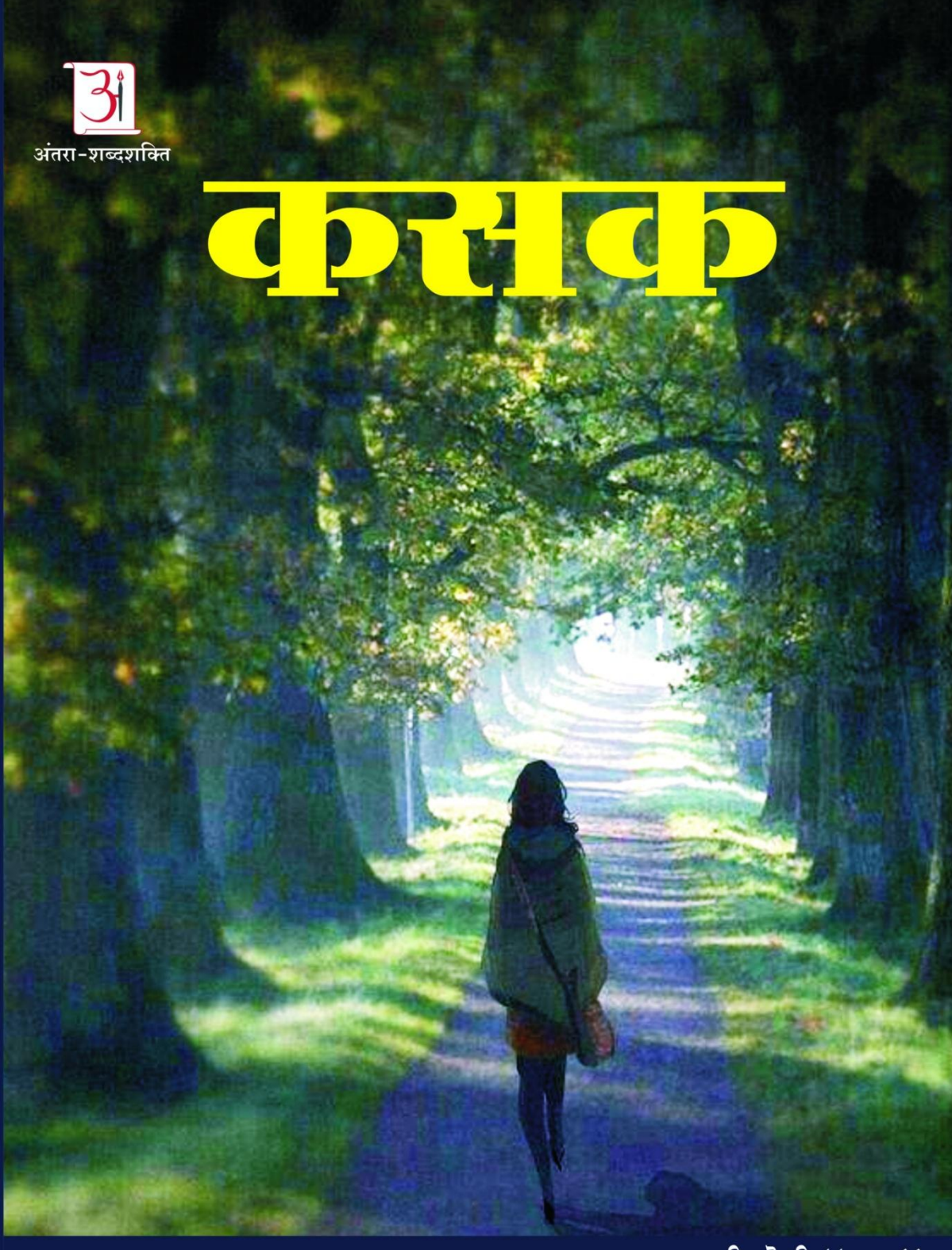

गज़ल संग्रह

गायत्री सोनी ''अदा''

कसक

(गजल संग्रह)

गायत्री सोनी 'अदा'

अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन

इंदौर,मध्यप्रदेश

ISBN- 978-93-88102-46-9

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

कार्यालय: १५ नेहरु चौक वारासिवनी,जिला बालाघाट (म.प्र) ४८१३३१

शाखा: एस-२०७, नवीन भवन, इंदौर प्रेस क्लब परिसर, इंदौर (म.प्र.) ४५२००१

दूरभाष: (कार्या) ०७६३३-२५३१५९ मो ९४२४७६५२५९

अणुडाक -antrashabshakti@gmail.com

अंतरताना- www.antrashabdshakti.com

प्रथम संस्करण २०१८ © गायत्री सोनी 'अदा'

मूल्य: ४०.०० रुपये

आवरण चित्र : संदीप सोनी, वारासिवनी

मुद्रक- शैलू कम्प्यूटर्स, वारासिवनी

"Kasak' by 'Gayatri Soni 'Ada'

वैधानिक चेतावनी : इस पुस्तक का सर्वाधिकार सुरक्षित है | लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकापी एवं रिकार्डिंग सहित इलेक्ट्रोनिक अथवा मशीनी किसी भी माध्यम से अथवा संग्रहण और पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा किसी भी रूप में पुरुत्पार्दित अथवा संचारित प्रसारित नहीं किया जा सकता हैं |प्रस्तृत पुस्तक की समस्त रचनाएँ लेखक द्वारा अन्तरा शब्द शक्ति प्रकाशन को प्रेषित की गई हैं | अत :प्रत्येक रचना की मौलिकता के किसी भी दावे हेतु प्रत्येक लेखक जिम्मेदार हैं| प्रस्तुत पुस्तक के घटनाक्रम पात्र,भाषाशैली,एवं स्थान सभी लखक की कल्पना हैं | किसी भी प्रकार के वाद-विवाद के लिए प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं हैं

भूमिका

हर इंसान की जिंदगी में किसी न किसी बात की कसक होती है। किसी को दौलत की, किसी को रिश्तों की, किसी को मुहब्बत की तो किसी को बीते लम्हों की।

हर आदमी कोई न कोई **कसक** अपने दिल मे लिये जी रहा है।

आमतौर पर हम दुनिया को दरकिनार कर सकते हैं लेकिन हमें अपने गम, कशमकश, घुटन, कामयाबी या पस्ताहाली जीस्त की इन सभी मंजिलों के सफ़र को जमाने की ... भीड़ में रहकर तन्हा ही तय करनी होती है।

जिंदगी की जद्दोजहद में इंसान जब दिमागी और रूहानी तौर पर बेवस और असहाय हो जाता है तब ये लफ़्ज जो दिल से निकलते हैं, मरहम का काम करते हैं। हर्फ़ों में अपनी भावनाओं, एहसासों और टीस की अभिव्यक्ति का नाम कसक है।

मैंने अपनी इन ग़ज़लों में जिंदगी के विभिन्न पहलुओं को समावेशित करने का प्रयास किया है कुछ इस तरह से...

गायत्री सोनी 'अदा'

अनुक्रमणिका

1. दो बोल	5
2. रास्ते	6
3. फ़रियाद	7
4. नज़ारे	8
5. नहीं देखा	9
6. किरदार	10
7. दरबान	11
8. कारवां	12
9. जमाना	13
10.असर	14
11.अस्मत	15
12.भीड़	16

दो बोल

दो बोल मुहब्बत के दिलो जान में रखना,
अहसास के फूलों को भी गुलदान में रखना।1।

इक बार तो दरिया में उतर जाने दे मुझे,
मर्ज़ी तेरी कस्ती' मेरी तूफान में रखना।2।

इंसानियत ही शान है इंसान की सदा,
नेकी औ बदी को ही सदा ध्यान में रखना।3।

दुनिया की चकाचौंध गलत राह दिखाये,
सच को तू हमेशा ही निगहबान में रखना।4।

फूलों की अदा देख खिला करतें हैं चेहरे,
ऐसा ही असर अपनी तू मुस्कान में रखना।5।

ताउम्र मुक़द्दर से मेरी दुश्मनी रही,
तुम जीत को तदबीर से अरमान में रखना।6।

बेशक मिलेंगी जिंदगी में मुश्किलें बहुत,
तू हौसलों की पोटली सामान में रखना।7।

तन्हाइयों में याद 'अदा' आये जब कभी,
अशआर मेरे प्यार के दीवान में रखना।8।

रास्ते

रास्ते हैं पुरखतर मंजर लिये,
चल पड़े हम हौसलों के पर लिये।1।

आग नफरत की लगी हर सिम्त जब,
हम कहाँ जाएँ भला छप्पर लिये।2।

तीरगी उसको डरा पायेगी क्या,
चल रहा है सर पे जो दिनकर लिये।3।

कांपती है ख़ौफ़ से हर इक कली,
आ रहा गुलचीं नया नश्तर लिए।4।

ये सिला हमको वफ़ा का है मिला,
जी रहे हैं ग़म का इक सागर लिये।5।

शीशा' ए दिल लेके जो घर से चला,
लोग राहों में मिले पत्थर लिये।6।

उसकी उल्फत का यही उपहार था,
दर्द दामन में हजारों भर लिये।7।

थक गया जब दर्दो ग़म से दिल "अदा',
सो गये फिर दर्द की चादर लिये।8।

फ़रियाद

दिल की हर फ़रियाद औ आहो फुगाँ खाली रही,
बस गमों की रोज़ होली और दीवाली रही।1।

दो निवाले ही मिले दिनभर की मेहनत से उसे,
मालपूओं से भरी मुफ़लिस की कब थाली रही।2।

क्या पता उसका मुकद्दर अब कहाँ ले जाएगा,
पेड़ से तकदीर की काटी हुई डाली रही।3।

ज़ीस्त तो ये ज़ीस्त है अच्छा है क्या औ क्या बुरा,
मिल रहा तक़दीर से, तक़दीर ही काली रही।4।

लम्स का अहसास यूँ क़ायम रहा है दरम्यां,
उसकी यादों से भरी इस दिल की ये प्याली रही।5।

आज भी क़ायम है दिल में इश्क़ की ही सल्तनत,
ये 'अदा' अपनी तो रानियों हरदम वाली रही।6।

नज़ारे

हंसी चांदनी रात दिलकश नज़ारे,
चले आओ तन्हा, तुम्हे दिल पुकारे।1।

भुला दो ज़माने की रस्में रिवाज़ें,
अगर चाहते हो बने हम तुम्हारे।2।

नदी प्रीत की बह रही है दिलों में,
चलें साथ मिल के किनारे किनारे।3।

कभी इश्क़ ओर मुश्क छुपता नही है,
बिखरती है खुशबू हवा के सहारे।4।

चला दिल उछल के रहे हाथ मलते,
निगाहों से उसने किये जब इशारे।5।

उतर के समंदर में ले आये मोती,
रहा हाथ मलता जो बैठा किनारे।6।

दिलों में है नफ़रत का फैला अंधेरा,
किधर जायेगें हम मुहब्बत के मारे।7।

हजारों बहाने बनाना, सताना,
समझता है दिल ये तुम्हारे इशारे।8।

'अदा' चाहते गर मुहब्बत में मंजिल,
रखो दिल मे जलते वफ़ा के शरारे।9।

नहीं देखा

मुसलसल बढ़ रहे आगे कभी रुककर नहीं देखा,
निगाहों में रही मंजिल कभी मुड़कर नहीं देखा।1।

चले जिस राह पर अक्सर कदम को फूँक के रख्खा,
लगी ठोकर मगर जिससे वही पत्थर नहीं देखा।2।

गुज़ारे साथ जो लम्हे कभी उल्फत की राहों में,
कोई पल उन पलों जैसा सनम बेहतर नहीं देखा।3।

ख़ुदाया बाद मुद्दत के हुआ जब सामना इक दिन,
हया से झुक गई पलकें उसे जी भर नहीं देखा।4।

सभी से पूछता रहता है अक्सर खैरियत लेकिन,
मेरा जख़्मे जिगर उसने कभी आकर नहीं देखा।5।

नशा तेरी मुहब्बत का चढ़ा जब से निगाहों पर,
कहीं तुझसा जमाने में हसीं दिलबर नहीं देखा।6।

अज़ब सा हो गया देखो हमारे शह्र का मंजर,
सुलगते घर, बिछी लाशें, लहू ख़ंजर नहीं देखा।7।

कोई भी दर्द गम हो चैन मिलता देख लो पल में,
कहीं भी गोद सा माँ की सुखद बिस्तर नहीं देखा।8।

नवाज़ा है हुनर मुझको खुदा ने शायरी का ये,
हँसाया है अदा सबको मग़र हँस कर नहीं देखा।9।

किरदार

किस कदर मसरूफ़ियत फैली है इस संसार में,
लोग अब मिलते नही अपने असल किरदार में।1।

हद से ज्यादा बढ़ गईं हैं अब दिलों में दूरियाँ,
हो गया मुश्किल गुजारा साथ एक परिवार में।2।

चंद सिक्कों में भले पा जाओ तुम सब कुछ यहाँ,
पर कभी मिलती नही सच्ची वफ़ा बाजार में।3।

क़त्ल करने के लिये ख़ंजर ज़रूरी तो नही,
धार जो होती क़लम में वो नही तलवार में।4।

चल रहे हैं शान से माँ की दुआ की ढाल ले,
देखना है जोर कितना ज़िन्दगी के वार में।5।

मेरा क़ातिल ही मेरा मुंसिफ बना बैठा है अब,
किस से अब इन्साफ मांगें जायें किस दरबार में।6।

बदगुमानी का सितम करती रही घायल मुझे,
हाले दिल अब क्या कहें तुमसे भला बेकार में।7।

मेरी अब दीवानगी का हाल तो देखो ज़रा,
तुम ही तुम आते नज़र हो हर दरो दीवार में।8।

साथ देने का था' वादा खायी थी कसमें 'अदा',
तोड़कर वादा वफ़ा छोड़ा है क्यों मझधार में।9।

दरबान

एक दरबान सा तना होना,
कितना दुश्वार है बड़ा होना।1।

हर जगह इम्तहान देने को,
है जरूरी पढ़ा लिखा होना।2।

बरग़लाना किसी को, आसाँ है,
ख़ुद का मुश्किल है आईना होना।3।

हर बशर के नसीब में है कहाँ,
चाहते सब हैं पारसा होना।4।

दिल से करके कभी वफ़ा देखो,
कितना आसां है बेवफा होना।5।

है सबब मेरी महकी सांसों का,
बन के खुशबू तेरा हवा होना।6।

इश्क़ कर के गुनाह कर बैठे,
अब तो बाक़ी है फैसला होना।7।

हिज्र का दोष क्यों किसी को दें,
अपनी किस्मत में था जुदा होना।8।

ये भी ग़म कोई कम नही है'अदा',
रूह का जिस्म से जुदा होना।9।

कारवां

खो गया कारवां रास्ता रह गया,
रहगुज़र में न कोई निशां रह गया।1।

वक़्त की रेत में मिट गया सब मग़र,
नाम दीवार पर इक लिखा रह गया।2।

लोग आते रहे लोग जाते रहे,
रास्ता फिर खड़ा का खड़ा रह गया।3।

छूटता ही नही ग़म से रिश्ता कभी,
दर्द का दिल से फिर वास्ता रह गया।4।

इश्क़ की सारी रस्मे निभाई मग़र,
क्यूँ अधूरा सा ये फ़लसफ़ा रह गया।5।

वक़्त की धार में लोग बहते गये,
दिल किनारे खड़ा सोचता रह गया।6।

इक नज़र क्या मिली, होश ही उड़ गए,
बन के आँखों में वो आइना रह गया।7।

आ गमे ज़िन्दगी साथ जी लें चलो,
फासला मौत से अब ज़रा रह गया।8।

ऐ 'अदा' रब्त है तुझसे ही धड़कनें,
बस यही वास्ता दरम्यां रह गया।9।

जमाना

जो गम में मुस्कुराना जानता है,
उसे सारा जमाना जानता है।1।

ख़ुदा से कम नही होता बसर जो,
बिलखते को हँसाना जानता है।2।

नगर में चल रही अफ़वाह हर सू,
कि गूंगा गुनगुनाना जानता है।3।

उसी की आजकल दुनिया दीवानी,
सदा जो बरगलाना जानता है।4।

उसे कमतर समझना भूल होगी,
हवा जो मोड़ लाना जानता है।5।

सुना है वो कभी रोता नहीं जो,
धुंए में गम उड़ाना जानता है।6।

नशीबा में हुई मंज़िल उसी के,
क़दम जो इक बढ़ाना जानता है।7।

असर

मुहब्बत का' मेरी असर देख लेना,
वो आयेंगे' थामे जिगर देख लेना।1।

हैं' हम मुन्तजिर इक तुम्हारी नज़र के,
मिले गर जो' फुरसत इधर देख लेना।2।

भुलाने की' कोशिश करोगे जो कभी तुम,
तो उजड़ा ये दिल का नगर देख लेना।3।

नही राह कोई न मंजिल है' अपनी,
वहीं पे रुका है सफर देख लेना।4।

रगों से बहे ज़ख़्म नासूर बनकर,
जफ़ाई का अपना ज़रर देख लेना।5।

नही चैन पाओगे यूं दूर जाकर,
मेरी आह का तुम असर देख लेना।6।

अगर राह चलते 'अदा' सामना हो,
उठाकर पलक इक नज़र देख लेना।7।

अस्मत

जब भी अस्मत पे वार होता है,
आदमी तार-तार होता है।1।

तोड़ देता है दिल वही आखिर,
लगने जब अख़्तियार होता है।2।

है ये अफ़सोस अब ख़ता करके,
कब कोई शर्मसार होता है।3।

सच बयानी पे जो रहे क़याम,
उसका परवर दिगार होता है।4।

शख़्स है वो ख़ुदा की मानिंद ही,
जो वतन पे निसार होता है।5।

तोड़ देता है दिल हदें सारी,
इश्क़ जब बेसुमार होता है।6।

प्यार से कर लो ज़िन्दगी रौशन,
प्यार क्या बार बार होता है।7।

भीड़

भीड़ में तन्हा खड़े तुम , हो गये बेज़ार क्या,
ज़ीस्त की जद्दोजहद से, मान बैठे हार क्या।1।

आपका हँसता हुआ चेहरा, बयाँ करता है ये,
आज अपने प्यार का वो, कर गया इज़हार क्या।2।

इश्क़ का दामन जो थामा, मत ज़माने से डरो,
तोड़ दो सारे जहाँ की सरहदें, दीवार क्या।3।

सज़दे में कब से खड़े हैं, सर झुकाये देखिये,
क्यों भला बैठे हो गुमसुम ना रहा ऐतबार क्या।4।

चल पड़े राहे वफ़ा में, हौसलों को साथ ले,
क्या फ़िकर फिर मंजिलों की रास्ता दुश्वार क्या।5।

जान की बाज़ी लगाते हैं, वतन की शान पर,
सरहदों के सामने फिर, तीज क्या, त्योहार क्या।6।

है नशा आखों में कैसा, डगमगाये जो क़दम,
अब 'अदा' लगता है तुझको, हो गया है प्यार क्या।7।

व्यक्तित्व दर्पण

नाम	- गायत्री सोनी 'अदा'
जन्म	- 1 जुलाई, (टीकमगढ़ म.प्र.)
माता	- श्रीमती शकुंतला सोनी
पिता	- श्री श्याम सुंदर सोनी
पति	- श्री महेन्द्र सोनी
शिक्षा	- एम.ए. (अंग्रेजी)
पता	- दतिया (म.प्र.)
संपर्क	- 9165342420
ई मेल	-
कार्यक्षेत्र	- गृहणी
विधा	- गज़ल, मुक्तक, कहानी एवं छंद मुक्त रचनाएँ
प्रकाशन	- एक सांझा गज़ल संग्रह 'गुंजन'
उपलब्धि	- अंतरा परिवार में शामिल होना।

यदि आप अंग्रेजी में हस्ताक्षर करते हैं तो निवेदन है कि 'हिन्दी में हस्ताक्षर करें', आपकी यह छोटी-सी कोशिश हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा बनाने में अमूल्य योगदान देगी ।

www.WomenAawaz.com
www.antrashabdshakti.com
978-93-88102-46-9
मूल्य 40/-
१५, नेहरू चौक, मेन रोड वारासिवनी, जि. बालाघाट (म.प्र.) पिन ४८१३३१, संपर्क- ९४२४७६५२५९, अणुडाक: antrashabdshakti@gmail.com